REPORT SUBMITTED TO THE PLANNING AND POLICY SUPPORT UNIT SOCIETY OF STATE PLANNING COMMISSION OF MADHYA PRADESH, BHOPAL

मध्यप्रदेश में आदिवासी महिलाओं में कुपोषण के कारणों का अभिज्ञापन – धार जिले के विशेष संदर्भ में

Dr. Ganesh Kawadia, Monika Dawar

APRIL 2018

PLANNING CHAIR OF STATE PLANNING COMMISSION ON
MICRO ECONOMIC GOVERNANCE, SCHOOL OF ECONOMICS
DEVI AHILYA UNIVERSITY INDORE, MADHYA PRADESH

प्रस्तुत शोध पत्र में आदिवासी समुदाय की आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि तथा आदिवासी समुदाय की महिलाओं में कुपोषण के स्तर एवं कुपोषण से संबंधित कारणों का अभिज्ञापन किया गया हैं। जिसमें आदिवासी समुदाय में भील एवं भीलाला महिलाओं का स्तरीय निदर्शन तकनीक (Stratified Sampling Technique) के माध्यम से आँकड़े एकत्रित किए गए हैं। महिलाओं में कुपोषण (Malnutrition) की गहनता को बॉडी मास इंडेक्स (Body Mass Index) द्वारा मापा गया हैं। कुपोषण के कारणों का अभिज्ञापन (Identity) करने के लिए प्रतिपगमन विश्लेषण (Regression analysis) का उपयोग किया गया है। शोध पत्र में पाया गया कि भील जनजाति की महिलाओं में कुपोषण की गहनता भीलाला जनजाति की महिलाओं की तुलना में अधिक है। भील जनजाति में 58.98 फीसद महिलाओं का एवं भीलाला परिवार में 47.5 फीसद महिलाओं का BMI अल्पवजन (Under Weight) के अंर्तगत हैं। इस प्रकार कुल 51.6 फीसद महिलाएँ ऐसी पायी गयी, जिनका वज़न सामान्य से कम हैं अर्थात वे कुपोषित हैं। भीलाला जनजाति में आर्थिक स्थिति में सुधार के कारणों से कुपोषण की गहनता कम होती जा रही हैं। वही भील महिलाओं में कुपोषण आर्थिक से ज्यादा सामाजिक कारणों से पायी गयी है। कृषि संबंधित कार्यों में संलग्न महिलाओं की अपेक्षा मजदूरी अर्थात घर के बाहर कार्य करने वाली महिलाओं का BMI (बॉडी मास इंडेक्स) बेहतर अवस्था में पाया गया। आदिवासी समुदाय में महिलाओं के BMI (बॉडी मास इंडेक्स) को रोजगार की प्रकृति ,परिवार की कुल वार्षिक आय, शिक्षा का स्तर एवं परिवार में कमाने वाले सदस्य एवं परिवार के आकार द्वारा प्रभावित होना पाया गया है।

Dr. Ganesh Kawadia is the **Chair Head** of the **State Planning Commission's Chair on Micro Economic Governance** established by the State Planning Commission of Madhya Pradesh, Bhopal at the School of Economics, Devi Ahilya University Indore. Being an accomplished Ex-Professor and retired Head of School of Economics, Devi Ahilya University Indore, he has published nine books and more than 70 research articles in national/international journals. His visionary leadership brought many laurels to the School of Economics under his Headship which include; financial support under **UGC-SAP** at **DRS Phase – III**, department being identified as a "**Center with Potential for Excellence**" (**CPEPA**) by the **University Grants Commission, New Delhi** and awarded as a "Centre for Excellence in Teaching and Research" by **Government of Madhya Pradesh, Bhopal**. He has been an eloquent public speaker having delivered several addresses in various national and international seminars on Indian Economic Policy Issues, many of which were part of live telecast programs on **UGC EDUSAT Gyanvani Channel**.

Miss Monika Dawar is a **Junior Research Fellow** under the **University Grants Commission, New Delhi** at the School of Economics, Devi Ahilya University Indore. She is currently pursuing her Ph.D. in economics at the same department. Her areas of interest and research work include Tribal Welfare, Sustainability and Development; Micro-Economics; Economics of Development and Growth; Public Finance (Economics).

For further details write to

Chair on Micro-Economic Governance

Coordinator: Dr. Kanhaiya Ahuja. Phone: +91-99260-20907 | Email: kanhaiya.ahuja@gmail.com

Chair Head: Dr. Ganesh Kawadia. Phone: +91-94253-52521 | Email: ganesh.kawadia@gmail.com

School of Economics, Devi Ahilya University
Takshashila Parisar, Khandwa Road, Indore.
Phone: +91-731-2361087/2363088 (fax) | Email: enquiry@soedavv.ac.in | website: www.soedavv.ac.in

कार्यकारिणी सारांश

1 मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था ने पिछले 7–8 वर्षों से लगातार कृषि विकास दर को औसतन 15–20 प्रतिशत पर बनाए रखा हैं। सामान्यरूप से यह कहा जाता है कि कृषि जनित विकास समावेशी (Inclusive) होता है। इससे विकास का लाभ राज्य के निम्न व्यक्ति तक पहुॅचना चाहिये। लेकिन उच्च विकास के बावजूद भी मध्यप्रदेश में गरीबी (Poverty) तथा कुपोषण (Malnutrition)की समस्या सबके लिये चिंता का कारण है। प्रदेश की आदिवासी जनसंख्या इन समस्याओं से सर्वाधिक ग्रसित है। अतः इस अध्ययन में आदिवासी महिलाओं में कुपोषण की समस्या तथा उनके कारणों को अभिज्ञापन (Identify) करने का प्रयास किया गया हैं।

2 प्रस्तुत शोध पत्र में स्तरित निदर्शन तकनीक (Stratified Sampling Technique) का प्रयोग कर 154 परिवारों का प्राथमिक समंक ,धार जिले की गंधवानी तहसील के 9 गाँवों से प्राप्त किए गये। व्यक्तिगत रूप से सर्वेक्षित परिवारों में महिलाओं का कुपोषण जानने के लिए महिलाओं का BMI (Body Mass Index) लिया गया हैं एवं इन आँकड़ो पर विभिन्न सॉख्यिकिय उपकरणों (Statistical Tools) जैसे माध्य (Mean) एवं प्रतिपगमन विश्लेषण (Regression Analysis) का प्रयोग कर आदिवासी परिवारों की महिलाओं के कुपोषण (Malnutrition) के कारणों का अभिज्ञापन (Identify) करने का प्रयास किया गया है।

3 अध्ययन में पाया गया कि भील जनजाति में 58.98 फीसद महिलाओं का एवं भीलाला परिवार में 47.5 फीसद महिलाओं का BMI अल्पवजन (Under Weight) के अंर्तगत हैं। इस प्रकार कुल 51.6 फीसद महिलाएँ ऐसी पायी गयी, जिनका वज़न सामान्य से कम हैं अर्थात वे कुपोषित हैं।

4 भीलाला जनजाति की आर्थिक स्थिति (Economic condition) भील जनजाति की तुलना में अधिक अच्छी अवस्था में पाई गयी। भील जनजाति में रोजगार के अवसरों की कमी एवं शिक्षा का स्तर भी कम पाया गया हैं। इनके पास भूमि की जोत कम होने के कारण कृषि से प्राप्त होने वाली आय भी कम हैं, अतः इस कारण इनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है।

5 भील एवं भीलाला परिवारों की महिलाओं के BMI (बॉडी मास इंडेक्स) एवं शिक्षा के स्तर में सार्थक संबंध हैं। अधिक शिक्षित महिलाओं में कुपोषण (malnutrition) की गहनता कम पायी गई हैं।

6 भील समुदाय में महिलाओं के BMI (बॉडी मास इंडेक्स) को परिवार का आकार, कार्य में संलग्न परिवार के सदस्य संख्या, शिक्षा का स्तर तथा व्यवसाय की प्रकृति प्रभावित करता है, जबकि भीलाला समुदाय में महिलाओं का BMI (बॉडी मास इंडेक्स) व्यवसाय की प्रकृति, परिवार की कुल आय, शिक्षा का स्तर एवं कार्य में संलग्न परिवार के सदस्य संख्या द्वारा प्रभावित हो रहा है।

7 अतः शोध यह सुझाव अग्रसित करता है कि आदिवासी समुदाय में कुपोषण (Malnutrition) एवं उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए आय प्राप्ति के साधनों को बढ़ाना होगा एवं शिक्षा का स्तर को बढ़ाने के लिए उपाय करने होंगे।

8 आदिवासी महिलाओं में आय के साधनों को बढ़ाने हेतु कुटीर उद्योग, पशुपालन एवं रोजगार के लिये स्वयं सहायता समुह को बढ़ावा देना होगा।

9 आदिवासी बहुल इलाको में मनरेगा एवं रोजगार संबंधित योजनाओं का क्रियान्वयन करना अति आवश्यक है। ताकी आदिवासी महिलाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सके एवं वे कुपोषण से निजात पा सकेगे जिससे गरीबी का निवारण संभव हो सकेगा।

10 आदिवासी समुदाय में महिलाओं को कुपोषण से निजात पाने के लिये, उनका आर्थिक रूप से सक्षम होना आवश्यक है। अतः उनके लिये एक विशेष कोष बनाया जा सकता है, जिसके अंर्तगत उन्हें निम्न ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध करवाया जा सके। ताकि वे अपना स्वयं का उद्यम लगा सके और उसे आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त हो ।

11 आदिवासी समुदाय में भील महिलाओं में कुपोषण की स्थिति आर्थिक से ज्यादा सामाजिक कारणों से पायी गयी अतः भील जाति की महिलाओं में ऑगनवाड़ी एवं स्वयं सहायता समुह द्वारा विशेष रूप से लक्ष्य बनाकर सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न सामाजिक विकास संबंधित योजनाओं से अवगत कराया जाना चाहिये। ताकि भील जाति की महिलाएॅ योजना का लाभ प्राप्त कर सके।

12 महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार के लिए पौष्टक भोजन की जानकारी एवं उसके प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिये समय –समय पर आगनवाड़ी कार्यकर्ता द्वारा प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी होगी।

प्रस्तावना

मध्यप्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत में दूसरे स्थान पर एवं जनसंख्या की दृष्टि से छठवें स्थान पर हैं, साथ हीं प्रदेश वनीय संसाधनों की विविधताओं का धनी हैं, यहॉ पर 4 कृषि ज़ोन हैं। देश की कुल आदिवासी जनसंख्या का एक चौथाई भाग मध्यप्रदेश में निवास करता हैं। इस कारण मध्यप्रदेश को आदिवासीयों का गढ़ भी कहा जाता हैं। प्रदेश में 70 फीसद जनसंख्या प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि संबंधित क्रियाकलापों में संलग्न हैं, अतः प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूत एवं सुदृढ़ बनाने में कृषि की अहम भूमिका हैं। प्रदेश का कृषि क्षेत्र में विकास तेजी से हुआ हैं। वर्ष 2007 से पूर्व प्रदेश की कृषि पिछड़ी अवस्था में थी, अर्थात कृषि की विकास दर बहुत ही कम थी। परंतु वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रदेश की कृषि विकास दर देश के औसत कृषि विकास दर की तुलना में कही अधिक हैं, प्रदेश ने 2007–08 से 2017–18 में कृषि के क्षेत्र में अचंभित उन्नति की हैं, जो सतत रूप से 15 प्रतिशत वार्षिक से अधिक रही हैं। स्पष्ट हैं कि प्रदेश ने कृषि के क्षेत्र में दो अंकिय विकास दर प्राप्त की हैं, परिणामस्वरूप वर्ष 2011–12 से 2015–16 में प्रदेश को खाद्यान्न उत्पादन एवं गेंहु के उत्पादन में 5 बार कृषि कर्मण पुरस्कार प्राप्त हुआ हैं। कृषि प्रदेश के लिए विकास का इंजन बनकर उभरा हैं। कृषि की विकास दर में वृध्दि के कारण प्रदेश का सकल घरेलू उत्पाद भी वर्ष 2011–12 में 9.7 फीसद, 2012–13 में 9.9 फीसद एवं 2013–14 में 11.1 फीसद बढ़ गया (नीति आयोग)। फलतः मध्यप्रदेश, देश के सर्वाधिक आर्थिक वृध्दि प्राप्त करने वाले राज्य के रूप में उभरा है। आर्थिक विकास में सकारात्मक परिवर्तन होने के कारणों से मध्यप्रदेश बिमारू (BIMARU) राज्यों से हटकर विकासशील राज्यों में शामिल हो गया हैं। इससे स्पष्ट हैं कि कृषि में उच्च विकास का प्रभाव विशेषरूप

ग्रामीण क्षेत्र, अनुसूचित जाति, जनजाति एवं वंचित वर्ग के जीवनस्तर, उनके सामाजिक, आर्थिक एवं जनांकिकिय परिवर्तन के रूप में दृष्टिगोचर होना चाहिये।

हालांकि प्रदेश आर्थिक विकास में तेजी से उभरता राज्य बना। जबकि दूसरी ओंर प्रदेश की मिलेनियम ड़ेवलपमेंट गोल रिपोर्ट 2014–15 के अनुसार प्रदेश मानव विकास में पिछड़ गया हैं। वर्ष 2011 के अनुसार प्रदेश में 54.2 फीसद बच्चें कुपोषित हैं। मातृत्व मृत्यु दर (प्रति 100000 जीवित जन्म देने वाली महिलाओं में) 221 महिलाएँ हैं, एवं महिलाओं में कुपोषण एवं अल्प भार में प्रदेश प्रथम 5 राज्यों में शामिल हैं। कुपोषण एवं खाद्य सुरक्षा का गहरा संबंध होता हैं, अतः राज्य भूख सूचकांक के अनुसार मध्यप्रदेश सबसे ज्यादा खाद्य असुरक्षा वाले राज्यों के अंर्तगत आता हैं। वर्ष 2011–12 में मध्यप्रदेश में 31.65 फीसद लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन निर्वाह कर रहे हैं, इनमें 53.17 फीसद जनजाति जनसंख्या गरीब हैं (MADHYA PRADESH STATE MDG REPORT 2014-15)। मध्यप्रदेश ने साक्षरता दर में वृध्दि की हैं परंतु जनजाति वर्ग में साक्षरता का स्तर अभी भी काफी कम हैं।

प्रदेश की आर्थिक विकास दर एवं मानव विकास के मानकों के बीच अंर्तसंबंधों से स्पष्ट हैं कि कृषि विकास का लाभ समाज के विभिन्न वर्गों में असमान रूप से हुआ हैं तथा यह विकास समाज के निम्नतम व्यक्ति तक पहुचने में सफल नहीं रहा हैं। इसके कारण प्रदेश का आदिवासी तथा पिछड़ावर्ग विकास के लाभो में सीमांत होता जा रहा है। अतः आदिवासी समुदाय की आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि तथा आदिवासी समुदाय की महिलाओं में कुपोषण के स्तर एवं कुपोषण से संबंधित कारकों का अध्ययन करना आवश्यक हैं।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

यादव एम.एस (1994) जेलिफी (1966) ने कुपोषण को परिभाषित करते हुए कहा हैं कि "यह एक विकृति की अवस्था हैं जो आवश्यक भोज्य पदार्थो की तुलनात्मक कमी या अधिकता के कारण उत्पन्न होती हैं"। **रजक जें. (2016)** इन्होंने मध्यप्रदेश के सहरीया जनजाति का अध्ययन किया जिसमें पाया की सहरीया जनजाति मुख्यतः वनोत्पाद, परंपरागत कृषि से अपनी आजीविका चलाते हैं। भूमि हस्तांतरण एवं पुर्नवास के कारण इनमें रोजगार के अवसरो में कमी आई हैं। इस कारण इनमें पौष्टिकता, स्वच्छता, शुध्द पेय जल की कमी एवं कुपोषण अधिक हैं जो इनकी खराब स्वास्थ्य स्थिति को स्पष्ट करता है। इसी तरह **संतोष कुमार सिंह (2009)** ने अपने अध्ययन में कहा हैं कि थारू जनजाति में पर्याप्त पौष्टिक आहार की कमी, उपयुक्त वस्त्र की कमी, रोजगार एवं आय का अभाव, अशिक्षा ,परंपरागत कृषि एवं भूमिहीनता के कारणो से यह समुदाय विकास में सहभागिन नही हो पाया। **सामल आर, पत्रा एस. (2015)** ने अपने शोध पत्र में बताया कि आदिवासी समुदाय में आय का स्तर बहुत कम है, जिसका मुख्य कारण रोजगार के अवसरों की कमी हैं। इनमें अधिकांश लोग मजदूरी एवं असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं। वे खाद्य पदार्थों पर अधिक व्यय करते हैं एवं अपनी आय का बहुत कम हिस्सा अखाद्य पदार्थों पर व्यय कर पाते है। **संखांग बसुमत्रेय (2015)** ने अपने शोध पत्र में बताया कि अखाद्य पदार्थों पर में होने वाला व्यय धीमी गती से बढ़ रहा है। क्यूकिं बोरो आदिवासी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि एवं मजदूरी से आय प्राप्त कर अखाद्य पदार्थों पर व्यय करते है। इनमें बहुत से परिवार ऋण लेकर भी उनकी आय से अधिक व्यय करते हैं। **वेणुगोपाल के. et. al. (2013)** ने भी अपने अध्ययन में बतलाया कि आदिवासी वर्ग कृषि में केवल घरेलू उपभोग के लिए खाद्यान्न फसलों का उत्पादन करते हैं, परंपरागत कृषि से इनकी प्रति व्यक्ति आय

कम होती हैं, फलतः वर्षभर घरेलू खर्च चलाना मुश्किल होता हैं, अतः इस वर्ग में उधार लेकर अपना खर्च चलाने की प्रवृत्ति मिलती है। **राजेश मिश्रा (2017)** ने अपने अध्ययन में आदिवासी समुदाय में महिलाओं की खराब स्वास्थ्य स्थिति को इंगित करते हुए बताया कि, यह वर्ग भोजन एवं आजीविका के लिए वनो पर निर्भर हैं। इनमें पौष्टिकता की कमी होती हैं, जिसका सीधा प्रभाव उनके बच्चों के स्वास्थ्य पर भी पड़ता हैं एवं बच्चों में कुपोषण का एक कारण समय पर पर्याप्त आहार न मिलना भी हैं। **गौतम कुमार क्षत्रिय (2014)** ने भी अपने अध्ययन में आदिवासी समुदाय मे जनांकिकिय, सामाजिक, आर्थिक संकेतको कों अन्य वर्गों से तुलना कर आदिवासी समुदाय को सबसे पिछड़ीं हुई माना हैं एवं इनमें अधिकांश परिवार की स्वास्थ्य स्थिति दयनीय अवस्था में हैं बतलाया, इनमें विशेषतः महिलाओं का उम्र के अनुसार कम वज़न पाया गया हैं। **बी. पी. भट्ट et. al. (2004)** ने आदिवासी समुदाय में जलाऊ लकड़ीयों के उपयोग का अध्ययन किया गया और पाया की यह वर्ग अनवीनीकरण ईधन का बहुत ज्यादा उपयोग करते हैं, जो इस समुदाय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति की दयनीय अवस्था की ओर इंगित करता हैं। **दूबें ए. (2009)** इन्होनें अपने अध्ययन में बतलाया कि अधिकांश आदिवासी परिवार प्राथमिक क्षेत्र से संबंधित रोजगार में कार्यरत है। जिन गाँवों में जनजाति वर्ग कि अधिकता हैं वहॉ पर प्रति व्यक्ति औसत उपभोग कम पाया गया। फलतः यह वर्ग अन्य वर्गों की तुलना में अधिक गरीबी एवं कुपोषण से ग्रस्त हैं। **एन.अरलप्पा et. al. (2010)** ने भी अपने अध्ययन में बतलाया कि ग्रामीण क्षेत्र में दाल एवं सब्जियों के उपभोग में कमी आ रही हैं, जिसके कारण उनमें कुपोषण का स्तर बढ़ रहा है। **नायक वि. et. al. (1984)** ने एनएसएसओं के वर्ष 1973–74 एवं 1977–78 के आँकड़े के द्वारा अध्ययन में बताया कि ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले अनुसूचित जाति तथा जनजाति परिवारों में उपभोग स्तर में असमानता

देखी गयी हैं। वही **आभा गुप्ता दिपक के. (2014)** के अध्ययन में आर्थिक सुधार के उपरांत खाद्य पदार्थ विशेषतः मोटे अनाज के उपभोग में गिरावट आई है, परंतु खाद्य पदार्थ जैसे फल ,सब्जियॉ, मॉस उत्पादों के उपभोग में वृध्दि हुई हैं। इन अध्ययनों से यह बोध होता हैं कि विकास की प्रक्रिया में, आदिवासी समुदाय में सीमान्तीकरण की प्रवृत्ति के कारण इनमें कुपोषण की प्रवृत्ति बढ़ी है। अतः इस अध्ययनो से मध्यप्रदेश में आदिवासी परिवारों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति तथा उसमें कुपोषण के कारणों का अभिज्ञापन करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

- मध्यप्रदेश में आदिवासी समुदाय में सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- प्रदेश में आदिवासी समुदाय की महिलाओं में बॉडी मास इंड़ेक्स के आधार पर कुपोषण की श्रेणी का अध्ययन करना।
- प्रदेश में आदिवासी समुदाय में महिलाओं के कुपोषण को प्रभावित करने वालें कारकों का अध्ययन करना।
- प्रदेश में आदिवासी समुदाय में कुपोषणता से निजात पाने के लिए आवश्यक नीतिगत उपायों का अभिज्ञापन करना।

शोध विधि

यह अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक आँकड़ो पर आधारित है। प्राथमिक आँकड़ो को इकट्ठा करने के लिए स्तरित निदर्शन तकनीकि (stratified random technique) का प्रयोग किया गया। आदिवासी जनसंख्या का सर्वाधिक अनुपात धार जिलें में होने के कारण इसकी 7

तहसीलों में से गंधवानी तहसील का चयन किया है। गंधवानी तहसील में 90.74 प्रतिशत आदिवासी जनसंख्या निवास करती हैं, यहॉ की साक्षरता दर सभी तहसीलों की तुलना में सबसे कम (45.4 प्रतिशत) हैं। गहन अध्ययन के लिए 9 गाँवो का यादृच्छित रुप (randomly) से चयन कर उनमें से 154 जनजाति परिवारों का सर्वेक्षण किया गया हैं। जिनमें से भील एवं भीलाला जनजातीय परिवारों का सर्वे किया हैं। 54 भील जनजाति के परिवार एवं 100 भीलाला जनजाति के परिवारों का चयन कर उनका सर्वेक्षण अनुसूची तथा साक्षात्कार कर समंको का एकत्रीकरण किया गया।

सर्वेक्षित परिवारों में महिलाओं में कुपोषण की गहनता को जानने के लिये महिलाओं का बॉडी मास इंडेक्स (BMI):

$$BMI = \frac{\text{Weight of the Woman (Kg)}}{Height\ of\ the\ Woman\ in\ meter^2}$$

गाँवो में ऑगनवाड़ी केंद्रों की सहायता से चयनित महिलाओं का (BMI) लिया गया हैं। इन आँकड़ो पर विभिन्न सॉख्यिकीय उपकरणों जैसे माध्य एवं प्रतिपगमन विश्लेषण के माध्यम से आदिवासी परिवारों की महिलाओं में कुपोषण के कारणों का अभिज्ञापन करने के लिए निम्न प्रतिपगमन मॉडल (regression model) का प्रयोग किया गया।

$$Y_{BMI} = b_0+b_1X_1+ b_2X_2+ b_3X_3+ b_4X_4+ b_5X_5+ b_6X_6+\mu_t$$

जहॉ

Y- महिलाओं के BMI को आश्रित चर लिया हैं, तथा निम्नानुसार स्वतंत्र चर लिए गये

X_1- महिलाओं की शिक्षा का स्तर (अशिक्षित $D_1=0$ अन्यथा $D_1=1$)

X_2- महिलाओं के परिवार की कुल वार्षिक आय

X_3 - महिलाओं के परिवार का मुख्य व्यवसाय, (घर के कार्यों में कार्यरत महिला $D_2=0$ अन्यथा $D_2=1$)

X_4 -महिलाओं की शादी के समय की आयु; X_5 - महिलाओं के परिवार का आकार

X_6 - महिलाओं के परिवार में खाद्य पदार्थ में होने वाला व्यय (प्रतिशत में)

भील जनजाति

भील जनजाति भारत की तीसरी एवं मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति हैं। भील तीर–कमान को अपना श्रंगार मानते हैं, ये तीर–कमान चलाने में निपूर्ण होते हैं। भील शब्द संस्कृत की "भिद्" धातु से भेदने अर्थ में प्रयुक्त हुआ हैं। ऐसा माना जाता हैं कि भील शब्द की उत्पत्ति द्रविण भाषा के शब्द बिलु से हुई हैं, जिसका अर्थ धनुष एवं तीर होता हैं। भील जनजाति मंझले कद एवं गेंहुए रंग के होते हैं। इनकी शारीरिक बनावट मजबूत होती हैं। भोजन एवं व्यंजन की प्रकृति मुख्य रूप से इनकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती हैं। जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति दयनीय होती हैं, उनमें मोटा अनाज (मक्का) खाने की प्रवृत्ति अधिक होती हैं। भीलों में गेंहू खाद्यान्न पदार्थ के रूप में शामिल नही था। अपितु इनके क्षेत्र में अकाल होने के कारण भारत सरकार द्वारा गेंहू का वितरण राशन की दूकान से किया गया था, तब से यह वर्ग गेंहू का भी उपभोग करने लगा हैं। ये उन्हीं सब्जियों का सेवन करते है, जो वे स्वयं बोते हैं एवं खाद्य तेल, घी का प्रयोग भी अल्प मात्रा विशेषतः त्यौंहारों पर ही करते हैं। भील जनजाति आखेट से प्राप्त मछली का भी उपभोग करते हैं। मॉस का उपभोग यह वर्ग हाट के दिन एवं विशेष अवसरों पर करते हैं। भील समुदाय में शराब का सेवन बहुतायत से पाया जाता हैं, वे अक्सर महुए की स्वयं द्वारा बनायी हुई शराब का सेवन करते हैं। यह शराब सस्ती एवं अधिक नशा देने वाली होती हैं। शराब का प्रयोग सामान्यतः रात्री में एवं विशेष अवसरों, त्यौहारों पर किया जाता हैं। भील जनजाति समुदाय में शराब का सेवन करना परंपरागत संस्कृति का एक अंग रहा हैं।

शादी ब्याह एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रिश्तेदारों द्वारा भोजन, कपड़ो की व्यवस्था की जाती हैं, फलतः सांस्कृतिक कार्यक्रमों में खर्च का भार सभी रिश्तेदारों में बंट जाता हैं। प्रायः यह जाति जादू–टोना, भूत प्रेत पर बहुत विश्वास करती हैं। यह जाति मुख्य रूप से उत्तरी महाराष्ट्र, पश्चिमी मध्यप्रदेश, गुजरात एवं राजस्थान में पायी जाती हैं। मध्यप्रदेश में झाबुआ जिले में यह जनजाति सबसे अधिक पायी जाती हैं।

भीलाला जनजाति

भीलाला जनजाति भील समुदाय की उपजाति हैं। इन्हें उजला भील/क्षत्रिय भील भी कहते हैं। ऐसा माना जाता हैं कि भीलाला समुदाय की उत्पत्ति मुस्लिम समुदाय के आक्रमण के कारण राजपूत भाग कर जंगलों में चले गये थें, वहीं उन्होंने भील कन्याओं से विवाह या वैवाहिक संबंध स्थापित किया। अतः उन्हीं की संतान "भीलाला" कही जाने लगी। भीलाला समुदाय के शरीर एवं चेहरे की बनावट, कद काठी प्राचीन राजपूतो की तरह हैं। इनके रीति रिवाज राजपूतों की तरह होते हैं, परंतु अधिकांश भीलाला जनजाति के लोंगो के रीति रिवाज भीलों के रीति रिवाज से मिलते हैं। यह जाति मध्यप्रदेश के झाबुआ, धार, रतलाम एवं पश्चिम निमाड़ जिलों में पायी जाती हैं। भीलाला भूमि स्वामी अपने नाम के साथ "राव" या "रावत" पदवी रखते हैं।

न्यादर्श का स्वरूप

सर्वेक्षित भील समुदाय में 39 (72.23%) एकल परिवार एवं 15(27.78%) संयुक्त परिवार हैं, जबकि भीलाला जनजाति में 71% एकल परिवार एवं 29% संयुक्त परिवार हैं।

सर्वेक्षित भील परिवारों में 38 (70.38%) परिवारों के मुखिया अशिक्षित, 4 (7.41%) परिवारों के मुखिया प्राथमिक शिक्षा, 8(14.81%) परिवार के मुखिया माध्यमिक एवं 4(7.41%) परिवार के मुखिया उच्चतर माध्यमिक तक शिक्षित हैं। स्पष्ट हैं कि शिक्षा का स्तर भील समुदाय में बहुत कम हैं। वही सर्वेक्षित भीलाला परिवार में 65% परिवारों के मुखिया अशिक्षित, 13% परिवारों के मुखिया प्राथमिक शिक्षा एवं 12%, 6% और 4% परिवारों के मुखिया क्रमशः माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। स्पष्ट हैं कि शिक्षा के स्तर में भील समुदाय की तुलना में भीलाला समुदाय बेहतर स्थिति में हैं। जनजाति समुदाय में कृषि मुख्य व्यवसाय हैं, लेकिन भूमि का आकार छोटा होने के कारण कृषि के अलावा अन्य कार्य जैसे मजदूरी, निंबोली, महुआ, बबुल के फाफड़े बिनना, पशुपालन, दूकानदारी इत्यादी काम से यह समुदाय परिवार की आय को बढ़ाते हैं। चूँकि सर्वेक्षित गाँव में केवल खड़की ही ऐसा गाँव हैं, जहॉ नहर परियोजना के उपरांत कृषि आय में वृध्दि हुई हैं। जबकि अन्य गाँवों में सिंचाई के साधन बहुत कम हैं, फलतः अधिकांश कृषि भूमि सूखी रह जाती हैं। अधिकांश मजदूरों को स्थानीय स्थल पर रोजगार के साधन उपलब्ध नही होनें के कारण एवं कम मजदूरी प्राप्त होने के कारण महाराष्ट्र, गुजरात जैसे राज्यों में पलायन कर मजदूरी करते हैं। सर्वेक्षित परिवार में 104(67.54%) परिवारों के घर पर शौचालय की सुविधा नही हैं, जबकि 40(25.98%) परिवारों में स्वच्छता मिशन द्वारा शौचालय बनाये गये हैं। वही 7(4.55%) परिवारों में स्वच्छता मिशन द्वारा शौचालय का कार्य अधुरा हुआ हैं, जबकि स्वच्छता मिशन के अंर्तगत बनाए गए शौचालयों में 13(8.45%) परिवारो ने अपने घर से भी व्यय किया हैं। सर्वेक्षित गाँवो में 34(22.08%) परिवार ऐसे है जहाँ अस्पताल की सुविधा हैं, जबकि 120(77.93%) परिवारों के गाँव में अस्पताल की सुविधा नहीं हैं, उन्हें इलाज के लिए शहर जाना पड़ता

हैं। 21(13.64%) परिवारों के गाँव में 24 घंटे बिजली उपलब्ध हैं तथा 129(83.77%) परिवारों में 6 से 12 घंटे बिजली उपलब्ध रहती हैं। जबकि 4(2.6%) परिवारों में बिजली की सुविधा नहीं हैं।

सर्वेक्षित परिवारों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति

तालिका क्र.1– न्यादर्श की विशेषता

क्र.	**सूचक**	**भील**	**भीलाला**
1	बॉडीमास इंडेक्स 18.5 से कम (प्रतिशत महिलाएँ)	58.98	47.5
2	बॉडीमास इंडेक्स 18.5 से अधिक (प्रतिशत महिलाएँ)	41.03	52.49
3	महिलाओं का औसत बॉडीमास इंडेक्स	18.70	19.02
4	औसत परिवार का आकार	6.5	6.42
5	औसत कमाने वाले सदस्यों की संख्या	3.5	3.86
6	औसत भूमि का आकार	1.79	6.32
7	औसत परिवार की कुल आय	70621.8	103972.3
8	अशिक्षित महिलायें (प्रतिशत में)	78.21	74.47
9	शिक्षित महिलायें (प्रतिशत में)	21.8	25.54
10	घरेलू व्यवसाय में कार्यरत महिलाऐं (प्रतिशत में)	79.49	86.52
11	मजदूरी में कार्यरत महिलाएँ (प्रतिशत में)	20.51	12.76
12	शादी के समय महिलाओं की औसत आयु	18.25	18.42

स्रोत–प्राथमिक सर्वे

आदिवासी समुदाय की महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को जानने के लिये तालिका क्रमांक 1 में विभिन्न सूचकों का औसत तथा प्रतिशत का ऑकलन किया गया है। जिसमें पाया गया कि भील जनजाति में 58.98 फीसद महिलाओं का BMI अल्प वज़न की श्रेणी में आता हैं। वही भीलाला परिवार में 47.5 फीसद महिलाओं का BMI अल्पवजन की श्रेणी के अंर्तगत आता हैं। जिसे सामान्यतः कुपोषण माना जा सकता हैं। भील जनजाति में 41.03 फीसद महिलाओं का तथा भीलाला समुदाय में 52.49 फीसद महिलाओं का BMI 18.5 से अधिक हैं, जिन्हें सामान्य माना जा सकता है। इस प्रकार भील समुदाय में औसतन BMI 18.7 हैं, जबकि भीलाला समुदाय की महिलाओं में यह औसत 19.02 हैं।

स्पष्ट हैं कि भील समुदाय की महिलाओं में भीलाला महिलाओं की तुलना में कुपोषण की गहनता अधिक हैं। परिवार के औसत आकार में भील एवं भीलाला समुदाय में कुछ ज्यादा अंतर देखने को नही मिला, परंतु फिर भी भीलाला समुदाय में परिवार का औसत आकार भील जनजाति की तुलना में कम हैं। भील समुदाय के परिवारों में औसत कमाने वाले सदस्यों की संख्या 3.5 हैं, जबकि भीलाला समुदाय में यह औसत 3.86 हैं। स्पष्ट हैं कि भीलाला समुदाय में परिवार का औसत आकार तो कम है लेकिन कार्यशील जनसंख्या का औसत अधिक है, जो उनकी अच्छी आर्थिक स्थिति को स्पष्ट करता हैं। भील जनजाति के परिवारों में भूमि का औसतन आकार 1.79 बीघा हैं, जबकि भीलाला जनजाति में भूमि का औसतन आकार 6.32 बीघा हैं, परिणामस्वरूप भीलाला जनजाति में वार्षिक आय औसत रूप से भील जनजाति की तुलना में अधिक हैं। सर्वेक्षित भील जनजाति महिलाओं में अशिक्षित महिलाएँ 78.21 प्रतिशत हैं एवं शिक्षित महिलाएँ 21.80 प्रतिशत है। जबकि भीलाला समुदाय में अशिक्षित महिलाएँ 74.47 प्रतिशत एवं शिक्षित महिलाएँ 25.54 प्रतिशत हैं। जो यह दर्शाता हैं कि भीलाला तथा भील जनजाति में शिक्षा का स्तर में कोई विशेष अंतर नही हैं। भील समुदाय में घरेलू व्यवसाय में कार्यरत 79.49 प्रतिशत महिलाएँ हैं, एवं 20.51 प्रतिशत महिलाएँ मजदूरी में कार्यरत हैं। वही भीलाला समुदाय में 86.52 प्रतिशत महिलाएँ घरेलू व्यवसाय में कार्यरत हैं, एवं मात्र 12.76 प्रतिशत महिलाएँ मजदूरी में कार्य करती हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि भीलाला जनजाति के पास औसत रूप से जोत का आकार अधिक है, इसलिए इस समुदाय की महिलायें घरेलू व्यवसाय में ही अधिक सहयोग करती हैं। शादी के समय महिलाओं की औसत उम्र में भील एवं भीलाला समुदाय में कोई सार्थक अंतर देखने को नही मिला। उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि भीलाला समुदाय आर्थिक एवं सामाजिक रूप से भील समुदाय की तुलना में कुछ बेहतर हैं तथा इस

समुदाय की महिलाओं में घर के व्यवसाय अर्थात कृषि में ही काम करने की प्रवृत्ति अधिक हैं।

भील एवं भीलाला समुदाय में व्यवसाय की प्रकृति तथा वार्षिक आय की स्थिति

तालिका क्र. 2

भील एवं भीलाला समुदाय के परिवार की कुल वार्षिक आय एवं व्यवसाय

परिवार की कुल आय	कृषक		मजदूर		सेवा क्षेत्र		कुल समुदाय	
	भील	भीलाल I	भील	भीला ला	भील	भीलाला	भील	भीलाला
50000 से कम	21	32	4	0	0	0	25 (32)	32 (22.69)
50000–100000	37	58	6	2	0	7	43 (55)	67 (47.51)
100000–150000	3	13	4	0	0	4	7 (8.97)	17 (12.05)
150000 से अधिक	1	19	2	3	0	3	3 (3)	25 (17.73)
कुल समुदाय	62(79)	122(87)	16(21)	5(3)	0	14 (10)	78(100)	141(100)

(कोष्टक में दर्शायी गयी संख्या प्रतिशत में हैं)

उपरोक्त तालिका क्रमांक 2 में भील एवं भीलाला समुदाय के परिवार की कुल वार्षिक आय एवं व्यवसाय की प्रकृति का अध्ययन किया गया हैं। जिसमें भील समुदाय में 32 फीसद परिवारों की वार्षिक आय 50 हजार से कम हैं, 55 फीसद परिवार की वार्षिक आय 50 हजार एवं 1 लाख के बीच हैं, मात्र 8 फीसद परिवार की वार्षिक आय 1 लाख 50 हजार से कम हैं। जिनमें से 79 फीसद कृषक, 21 फीसद मजदूर हैं। जबकि भीलाला समुदाय में 22.69 फीसद परिवारों की वार्षिक आय 50 हजार से कम हैं, 47.51 फीसद परिवारों की वार्षिक आय 50 हजार से 1 लाख के बीच हैं, मात्र 12 फीसद परिवारों की वार्षिक आय 1 लाख 50 हजार से कम हैं एवं 17 फीसद परिवारों की आय 1 लाख 50 हजार से अधिक हैं, इनमें से 86.65 फीसद कृषक हैं, 3 फीसद मजदूर हैं एवं 9 फीसद सेवा क्षेत्र में कार्यरत हैं। स्पष्ट हैं कि भीलाला समुदाय की आर्थिक स्थिति भील समुदाय की तुलना में बेहतर

हैं। भीलाला समुदाय मुख्य रूप से कृषि क्रियाओं में संलग्न है, इनमें मजदूरी की प्रवृत्ति बहुत ही कम है। कुछ परिवार सेवा क्षेत्र में भी कार्यरत हैं।

भील समुदाय में परिवार का आकार एवं महिलाओं के बॉडी मास इंडेक्स की स्थिति

चार्ट क्र. 1 परिवार के कुल सदस्य तथा महिलाओं के बॉडी मास इंडेक्स

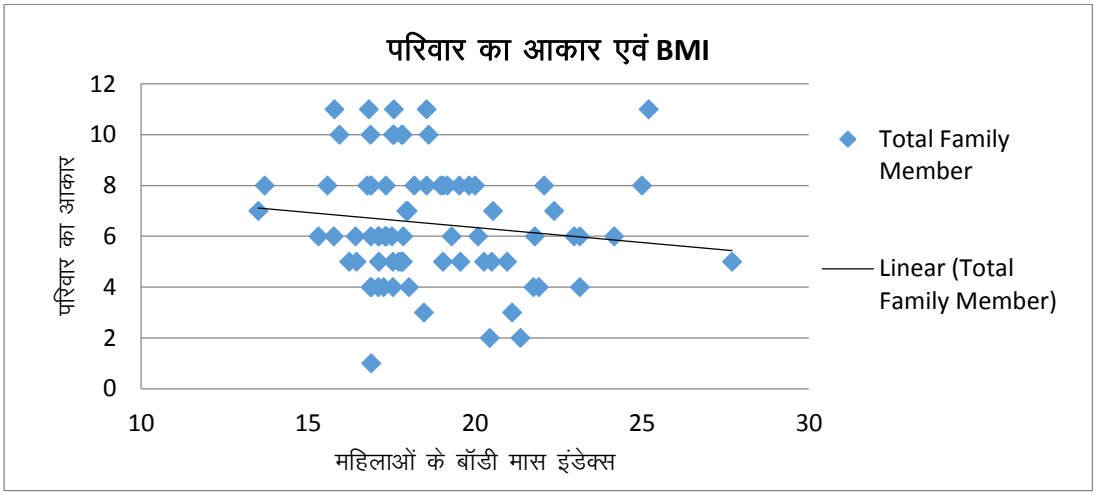

उपरोक्त चार्ट क्र. 1 में भील समुदाय की महिलाओं के बॉडी मास इंडेक्स एवं कुल परिवार के सदस्यों की संख्या को दर्शाया गया हैं। जिनमें Y अक्ष पर परिवार के सदस्यों की संख्या एवं X अक्ष पर महिलाओं के बॉडी मास इंडेक्स को दर्शाया गया हैं। चार्ट में पाया गया कि जिस परिवारों का आकार बड़ा हैं, वहॉ पर महिलाओं का सकेंद्रण कुपोषण की ओर अधिक हैं। जबकि जिस परिवार का आकार छोटा हैं, उनमें अधिकांश महिलाओं का BMI की बेहतर स्थिति की ओर सकेंद्रीत (centralize) हैं। रैखिक रेखा (linear line) द्वारा स्पष्ट हैं कि परिवार का आकार कम हैं, वहॉ पर अधिकांश महिलाओं का बॉडी मास इंडेक्स बेहतर स्थिति में पाया गया है।

भील जनजाति में कृषि भूमि का आकार एवं महिलाओं में बॉडी मास इंडेक्स की स्थिति

चार्ट क्र. 2 कृषि जोत का आकार एवं बॉडी मास इंडेक्स

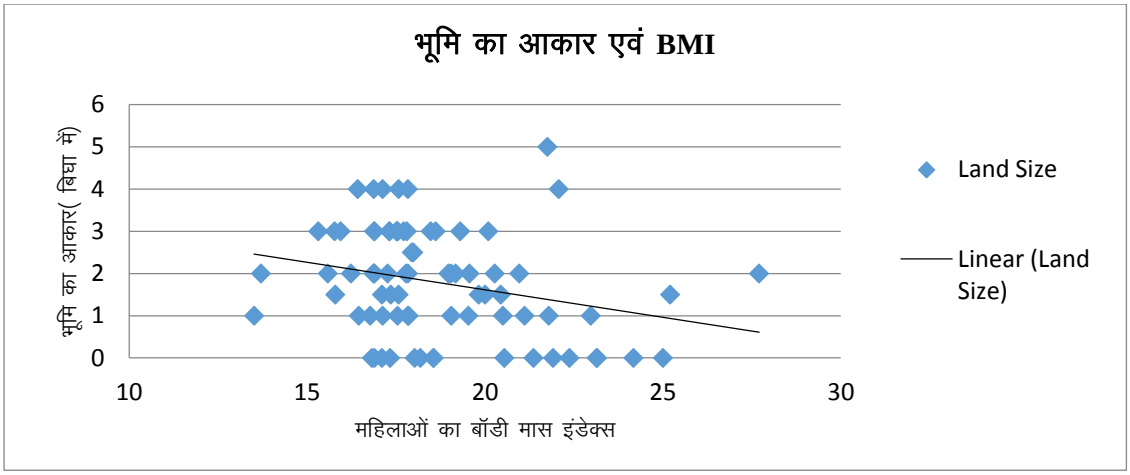

सर्वेक्षित भील समुदाय की महिलाओं के बॉडी मास इंडेक्स एवं कृषि भूमि को चार्ट क्र 2 में दर्शाया गया हैं। जिसमें Y अक्ष पर कृषि भूमि (बिघा में) (**1.5 बिघा = 1 एकड**) एवं X अक्ष पर महिलाओं के BMI को दर्शाया गया हैं। जिसमें पाया गया कि वे महिलाएँ जिनके परिवार में कृषि भूमि नही हैं एवं वे महिलाएँ जिनके परिवार में कृषि भूमि का आकार अधिक हैं, उनका सकेंद्रण बेहतर BMI की ओंर हैं। जबकि जिन महिलाओं के परिवार में कृषि भूमि का आकार कम हैं, उनका सकेंद्रण कम BMI की ओर पाया गया। फलतः उन महिलाओं में जो मजदूरी में कार्यरत हैं अर्थात जिनके परिवार में कृषि भूमि नही हैं एवं वे महिलाएँ जिनके पास कृषि भूमि का आकार अधिक है, उनका BMI बेहतर हैं।

भील जनजाति के परिवार में कमाने वाले सदस्यों की संख्या तथा महिलाओं के बॉडी मास इंडेक्स की स्थिति

चार्ट क्र. 3 परिवार में कमाने वाले सदस्यों की संख्या एवं बॉडी मास इंडेक्स

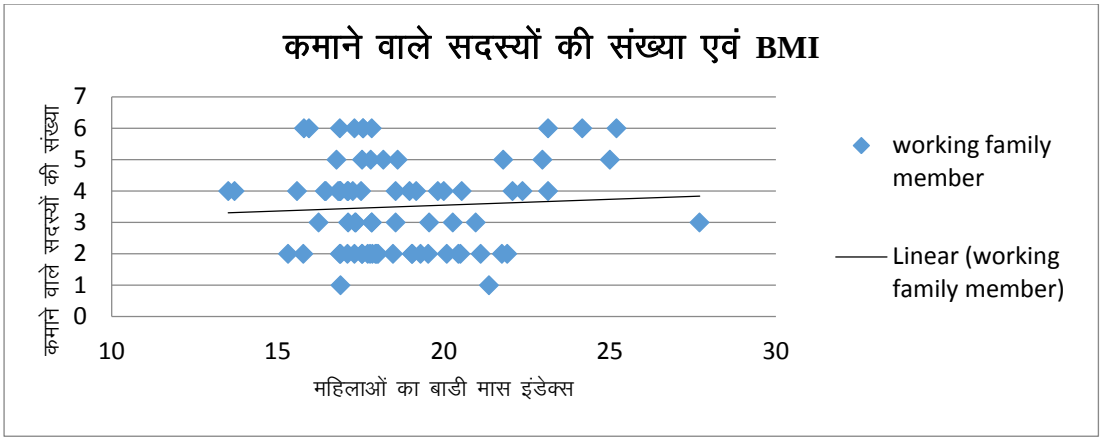

भील समुदाय की महिलाओं के बॉडी मास इंडेक्स एवं परिवार में कार्यरत सदस्यों की संख्या को चार्ट क्र 3 में दर्शाया गया हैं। जिसमें Y अक्ष पर कार्यरत सदस्यों की संख्या एवं X अक्ष पर महिलाओं के BMI को लिया गया हैं। जिसमें पाया गया कि जिनके परिवार में अधिक सदस्य कार्य में संलग्न हैं, वहॉ अधिकांश महिलाओं का सकेंद्रण बेहतर BMI की ओर पाया गया हैं। जबकि जिनके परिवार में कम सदस्य कार्यरत हैं उनमें कुपोषण की गहनता अधिक पायी गयी।

भील जनजाति में परिवार की कुल वार्षिक आय तथा महिलाओं का बॉडी मास इंडेक्स की स्थिति

चार्ट क्र. 4 परिवार की कुल वार्षिक आय एवं बॉडी मास इंडेक्स

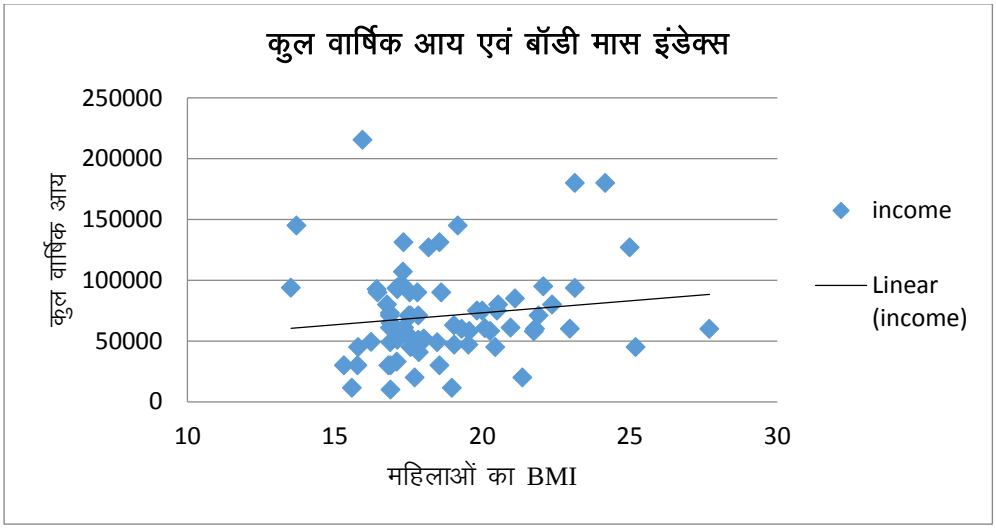

सर्वेक्षित भील समुदाय की महिलाओं के बॉडी मास इंडेक्स एवं कुल वार्षिक आय को चार्ट क्र 4 में दर्शाया गया हैं। जिसमें Y अक्ष पर कुल वार्षिक आय एवं X अक्ष पर महिलाओं के BMI को दर्शाया गया हैं। जिसमें पाया गया कि अधिकांश महिलाएँ जिनका BMI कम हैं, उनके परिवार की कुल वार्षिक आय कम हैं। जबकि वे परिवार जिनकी वार्षिक आय अधिक हैं, उन परिवार की महिलाओं का सकेंद्रण बेहतर BMI की ओर पाया गया।

भीलाला समुदाय में महिलाओं में बॉडी मास इंडेक्स एवं परिवार के आकार की स्थिति

चार्ट क्र. 5 महिलाओं में बॉडी मास इंडेक्स एवं परिवार का आकार

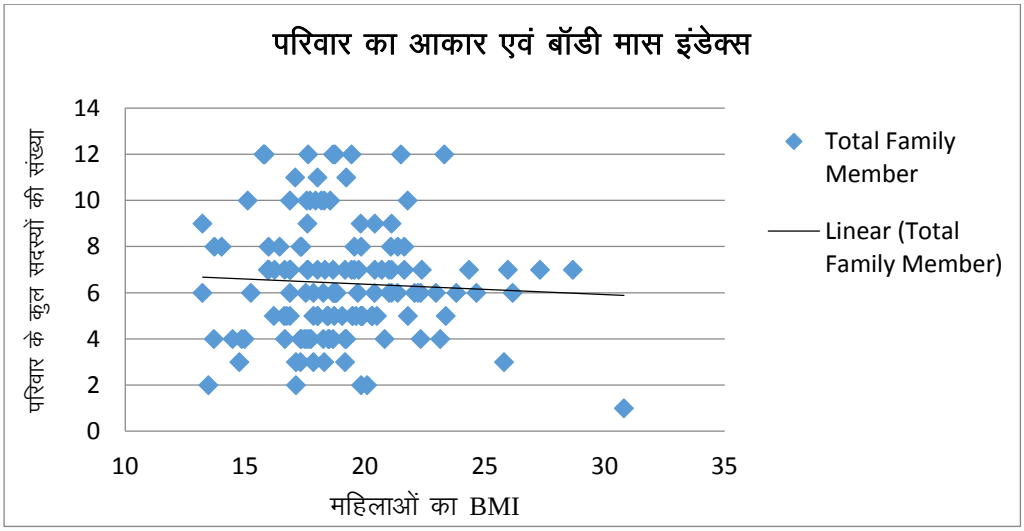

भीलाला समुदाय महिलाओं के BMI एवं परिवार के कुल सदस्यों की संख्या को चार्ट क्रमांक 5 में दर्शाया गया हैं। जिसमें Y अक्ष पर कुल सदस्यों की संख्या एवं X अक्ष पर महिलाओं के BMI को लिया गया हैं। जिसमें पाया गया कुल सदस्यों की संख्या एवं महिलाओं के BMI में उतार–चढाव पाया गया। अतः जिस परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक हैं, वहॉ पर महिलाओं का सकेंद्रण कुपोषण की ओंर अधिक है। जबकि अधिकांश वे

महिलाएँ जो छोटे आकार के परिवार से संबंधित हैं, उनका सकेंद्रण सामान्य BMI की ओर पाया गया।

भीलाला समुदाय में कृषि भूमि का आकार एवं महिलाओं के बॉडी मास इंड़ेक्स की स्थिति

चार्ट क्र. 6 कृषि योग्य भूमि का आकार एवं महिलाओं के बॉडी मास इंड़ेक्स

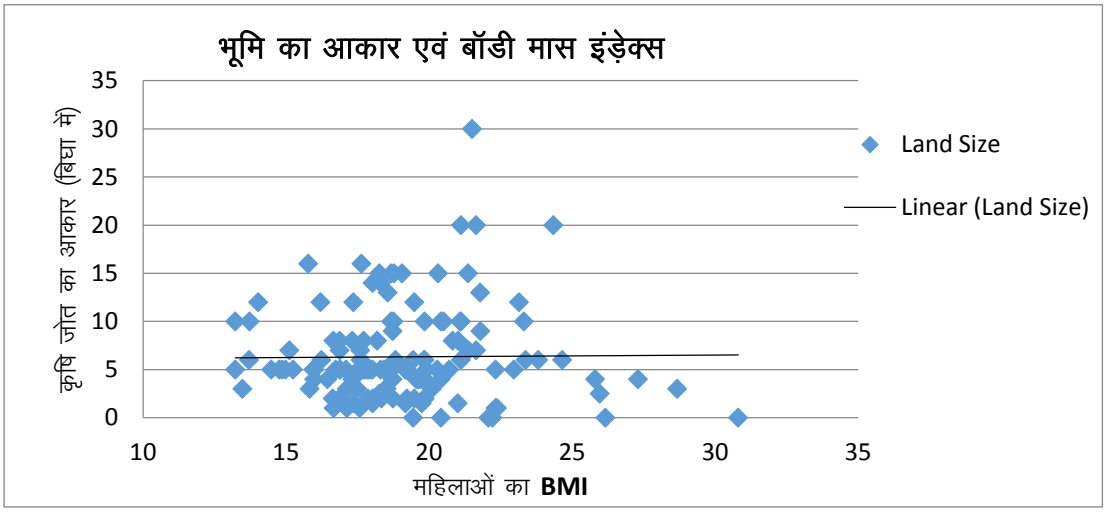

चार्ट क्रमांक 6 में भीलाला समुदाय की महिलाओं के बॉडी मास इंडेक्स एवं कृषि भूमि को दर्शाया गया हैं। जिसमें X अक्ष पर महिलाओं के BMI एवं Y अक्ष पर कृषि भूमि (बिघा में) को लिया गया हैं। जिसमें पाया गया कि वे महिलाएँ जिनके परिवार के पास कोई कृषि जोत नही एवं वे महिलाएँ जिनके परिवार में कृषि जोत का आकार अधिक हैं, उनका BMI बेहतर स्थिति में हैं। जबकि जिन परिवारों में कृषि जोत का आकार कम हैं, उनमें अधिकांश महिलाएँ कुपोषण के अंर्तगत पायी गयी हैं। स्पष्ट हैं कि जिस परिवार में कृषि भूमि नही हैं एवं वे परिवार जहॉ कृषि भूमि अधिक हैं, उन परिवारों की महिलाओं के BMI की स्थिति, कम कृषि भूमि की तुलना में बेहतर स्थिति में पायी गयी हैं।

भीलाला जनजाति में परिवार में कमाने वाले सदस्यों की संख्या तथा बॉडी मास इंडेक्स की स्थिति

चार्ट क्र.7 परिवार में कार्यरत सदस्यों की संख्या एवं बॉडी मास इंडेक्स

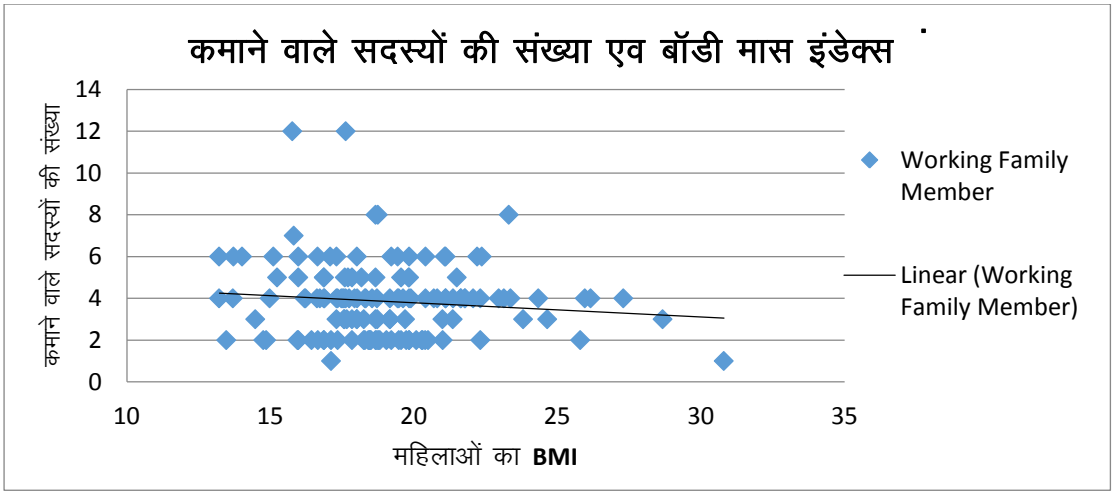

भीलाला समुदाय की महिलाओं में बॉडी मास इंडेक्स एवं परिवार में कार्यरत सदस्यों की संख्या को चार्ट क्र. 7 में दर्शाया गया हैं। जिसमें Y अक्ष पर परिवार में कमाने वाले सदस्यों की संख्या एवं X अक्ष पर महिलाओं के BMI को लिया गया हैं। जिसमें पाया गया की वे महिलाओं जिनके परिवार में कम सदस्य कार्यरत हैं, उन परिवार की अधिकांश महिलाओं का BMI बेहतर पाया गया हैं। जबकि जिस परिवार में अधिक सदस्य कार्य में संलग्न हैं, उनका BMI कम पाया गया। संभवतः इन परिवारों का आकार बड़ा होने के कारण इन परिवारों की महिलाओं का BMI कम पाया गया।

भीलाला जनजाति में परिवार की कुल वार्षिक आय तथा बॉडी मास इंडेक्स की स्थिति

चार्ट क्र.8 परिवार की कुल वार्षिक आय संख्या एवं बॉडी मास इंडेक्स

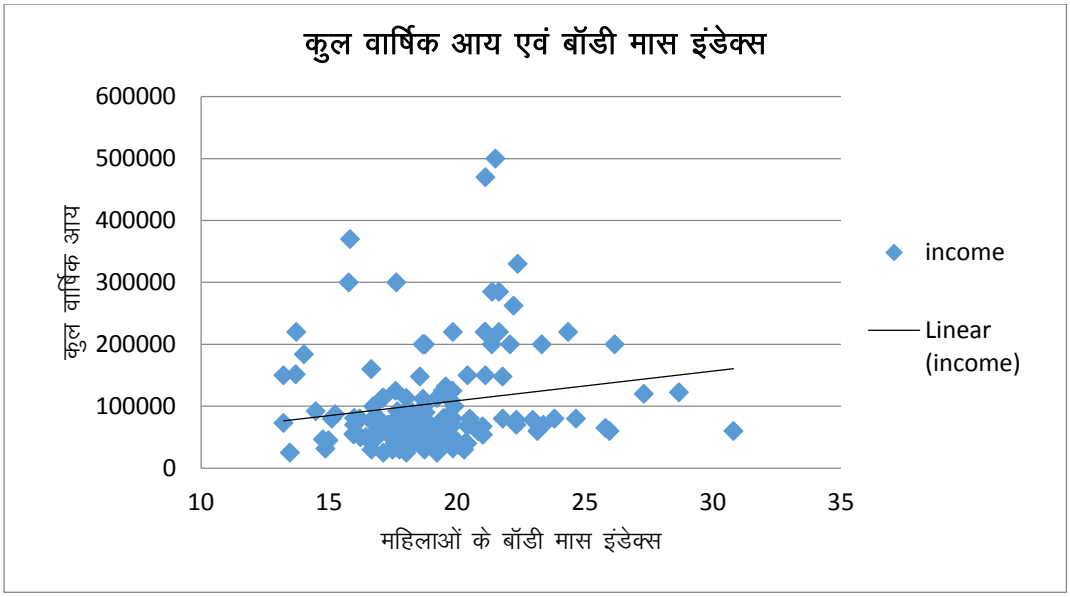

सर्वेक्षित भीलाला समुदाय की महिलाओं के बॉडी मास इंडेक्स एवं परिवार की कुल वार्षिक आय को चार्ट क्र 8 में दर्शाया गया हैं। जिसमें Y अक्ष पर कुल वार्षिक आय एवं X अक्ष पर महिलाओं के BMI को दर्शाया गया हैं। जिसमें पाया गया कि अधिकांश वे महिलाएँ जिनके परिवार की कुल वार्षिक आय कम हैं, उनका सकेंद्रण (centralization) कम BMI की ओर हैं। जबकि वे महिलाएँ जिनके परिवार की वार्षिक आय अधिक हैं, उनमें अधिकांश महिलाओं का सकेंद्रण (centralize) बेहतर BMI की ओर हैं। रैखिक रेखा के द्वारा स्पष्ट हैं कि वे महिलाओं जिनका BMI सामान्य है, उनमे अधिकांश परिवारों की वार्षिक आय अधिक हैं।

भील समुदाय में बॉडी मास इंडेक्स को निर्धारित करने वाले कारक

तालिका क्र. 3

भील समुदाय में प्रतिपगमन समीकरण का आकलन

R Square	0.233494		
	Coefficients	*Standard Error*	*P-value*
Intercept	22.29478	4.410716	3.31E-06
शादी के समय उम्र	-0.15753	0.208702	0.452895

परिवार का आकार	-0.29572	0.170872	0.087922
कार्य में संलग्न परिवार के सदस्य	0.595145	0.313595	0.061845
शिक्षा का स्तर	2.20546	0.739157	0.003918
कुल वार्षिक आय	-9.9E-06	1.05E-05	0.35166
रोजगार की प्रकृति	1.608621	0.779711	0.042814
भोजन पर व्यय % में	-0.01435	0.024219	0.555545

भील आदिवासी महिलाओं में कुपोषण के कारणों का अभिज्ञापन करने के लियें प्रतिपगमन मॉडल के द्वारा आकलन किया गया। जिसमें महिलाओं के BMI को उनकी शादी के समय उम्र, परिवार का आकार, परिवार में कार्यरत सदस्यों की संख्या, परिवार की वार्षिक आय, रोजगार की प्रकृति तथा भोजन पर व्यय(प्रतिशत में) आदी स्वतंत्र चरों पर प्रतिपगमन किया गया। इसके आकलन सारणी क्रमांक 3 में दर्शाये गये हैं। यह मॉडल कुल मिलाकर BMI में 23 प्रतिशत विचरण को व्यक्त कर पाया हैं। इसमें शिक्षा के स्तर को तथा व्यवसाय की प्रकृति के लिये मूक चरों (Dummy Variable) का उपयोग किया गया। अशिक्षित महिलाओं के लिए $D_{1=}$ 0 तथा शिक्षित महिलाओं के लिये D_1=1 माना गया। इसी प्रकार जो महिलायें घर के कार्यों में कार्यरत हैं, उनको $D_{2=}$ 0 जबकि जो बाहर मजदूरी पर कार्य करती हैं उनमें $D_{2=}$ 1 माना गया। इन आकलनों से स्पष्ट हैं कि मात्र शिक्षा का स्तर, व्यवसाय की प्रकृति तथा परिवार में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या का ही महिलाओं के BMI पर धनात्मक तथा सार्थक प्रभाव उत्पन्न कर सके हैं। अर्थात जो महिलायें शिक्षित हैं, जिनके परिवार में कार्यरत व्यक्ति अधिक है तथा जो घर के बाहर मजदूरी पर कार्य करती हैं, उनका BMI अधिक पाया गया अर्थात इनमें कुपोषण की स्थिति कम पायी गयी। इसके विपरित परिवार के आकार का महिलाओं के BMI पर ऋणात्मक प्रभाव (10% सार्थकता स्तर) देखने को मिला हैं, जो यह स्पष्ट करता है कि

अधिक बड़े आकार के परिवारों में कुपोषण की गहनता अधिक हैं। महिलाओं की शादी के समय उम्र, परिवार की आय तथा भोजन पर व्यय का BMI पर कोई सार्थक प्रभाव देखने को नही मिला। सम्भवतः परिवार की न्यून आय तथा उसमें भोजन पर व्यय, महिलाओं में कुपोषण को कम करने के लिये प्रभावी नही रहे। इससे यह स्पष्ट होता है कि भील समुदाय की महिलाओं में कुपोषण आर्थिक से ज्यादा सामाजिक कारणों से है। यह महिलाओं के प्रति समाज का उपेक्षित रवैया भी इस प्रवृत्ति के लिए जिम्मेदार हो सकता हैं।

भीलाला समुदाय में बॉडी मास इंडेक्स को निर्धारित करने वाले कारक

भीलाला आदिवासी महिलाओं में कुपोषण के कारणों को अभिज्ञापन करने के लियें प्रतिपगमन मॉडल का आकलन किया गया। जिसमें महिलाओं के BMI को उनकी शादी के समय उम्र, परिवार का आकार, परिवार में कार्यरत सदस्यों की संख्या, परिवार की वार्षिक आय, रोजगार की प्रकृति तथा भोजन पर व्यय (प्रतिशत में) आदी स्वतंत्र चरो पर प्रतिपगमन किया गया। यह मॉडल कुल मिलाकर BMI में 20 प्रतिशत विचरण को व्यक्त कर पाया हैं।

तालिका क. 4 भीलाला समुदाय में प्रतिपगमन समीकरण का आकलन

R Square	0.201802		
	Coefficients	*Standard Error*	*P-value*
Intercept	17.89209	3.132631	7.08E-08
कुल वार्षिक आय	9.79E-06	3.44E-06	0.005066
शिक्षा का स्तर	0.971017	0.535113	0.071856
रोजगार की प्रकृति	4.108388	1.163219	0.000569
परिवार का आकार	0.036281	0.14058	0.796748
कार्य में संलग्न परिवार के सदस्य संख्या	-0.44959	0.205034	0.030077
शादी की समय उम्र	0.076111	0.147441	0.606567
भोजन पर व्यय % में	-0.00332	0.017403	0.848998

इसमें शिक्षा के स्तर तथा व्यवसाय की प्रकृति के लिये मूक चरों (Dummy Variable) का उपयोग किया गया। अशिक्षित महिलाओं के लिए $D_{1=}$ 0 तथा शिक्षित महिलाओं के लिये D_1=1 माना गया। इसी प्रकार जो महिलायें घर के कार्यों में कार्यरत हैं, उनको $D_{2=}$ 0 जबकि जो बाहर मजदूरी पर कार्य करती हैं उनमें $D_{2=}$ 1 माना गया। इन आकलनों से स्पष्ट हैं कि मात्र शिक्षा का स्तर, व्यवसाय की प्रकृति, परिवार में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या तथा परिवार की आय का ही BMI पर धनात्मक तथा सार्थक प्रभाव देखने को मिला हैं। अर्थात जो महिलायें शिक्षित हैं, जिनके परिवार में कार्यरत व्यक्ति अधिक है, जो घर के बाहर मजदूरी पर कार्य करती हैं तथा जिनके परिवार की आय अधिक हैं उनका BMI अधिक पाया गया अर्थात इनमें कुपोषण की स्थिति कम पायी गयी। महिलाओं की शादी के समय उम्र, परिवार का आकार तथा भोजन पर व्यय का BMI पर कोई सार्थक प्रभाव देखने को नही मिला। सम्भवतः परिवार का छोटा आकार तथा उनमें भोजन पर व्यय, महिलाओं में कुपोषण को कम करने के लिये प्रभावी नही रहे। इससे स्पष्ट है कि, भीलाला जनजाति में आर्थिक स्थिति में सुधार के कारण कुपोषण की गहनता कम होती जा रही हैं। यह वर्ग आर्थिक सामाजिक रूप से भील जनजाति की तुलना में अधिक विकसित हैं। इसलिए इसमे कुपोषण की प्रवृत्ति कम पाई गई।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध आलेख में भील एवं भीलाला आदिवासी समुदाय की सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं महिलाओं में कुपोषण के स्तर का अध्ययन किया गया हैं। सर्वेक्षित भील जनजाति में 58.98 फीसद महिलाओं एवं भीलाला परिवार में 47.5 फीसद महिलाओं का BMI अल्पवजन के अंर्तगत पाया गया हैं। जिसे कुपोषण की श्रेणी में माना जाता हैं। इस प्रकार कुल 51.6

फीसद महिलाओं का वज़न सामान्य से कम हैं अर्थात वे कुपोषित हैं। कृषि संबंधित कार्यों में संलग्न महिलाओं की अपेक्षा मजदूर वर्ग में संलग्न महिलाओं में कुपोषण की प्रवृत्ति कम पाई गई हैं। इसका कारण यह पाया गया कि घरेलू व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं की संपुर्ण आय घर के मुखिया के पास होती हैं, एवं कृषि संबंधित आय में अस्थिरता पायी जाती हैं। जबकि घर के बाहर कार्य करने वाली महिलाओं के पास पर्याप्त आय होती हैं जिन्हे समय पर मजदूरी प्राप्त हो जाती हैं, जिसे वे स्वयं पर व्यय कर सकती हैं। भील समुदाय में महिलाओं के बॉडी मास इंडेक्स को परिवार का आकार, कमाने वाले परिवार के सदस्य, शिक्षा का स्तर तथा परिवार के रोजगार की प्रकृति के द्वारा प्रभावित होना पाया गया है, जबकि भीलाला समुदाय में महिलाओं के बॉडी मास इंडेक्स को रोजगार की प्रकृति ,परिवार की कुल वार्षिक आय, शिक्षा का स्तर एवं कमाने वाले परिवार के सदस्य संख्या द्वारा प्रभावित होना पाया गया है। भीलाला जनजाति में आर्थिक स्थिति में सुधार के कारणों से कुपोषण की गहनता कम होती जा रही हैं। वही भील समुदाय में महिलाओं में कुपोषण की स्थिति आर्थिक से ज्यादा सामाजिक कारणों से है। जनजाति परिवारों में यह महिलाओं के प्रति उपेक्षीत रवैया भी इस प्रवृत्ति के लिए जिम्मेदार हो सकता हैं। अतः आदिवासी समुदाय में कुपोषण की प्रवृत्ति को कम करने के लिये उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि में सुधार की आवश्यकता हैं।

संदर्भ सूची

संतोष कुमार सिह (2009), थारू जनजाति एवं गरीबी उत्तराखंड के संदर्भ में, नई दिशाएँ, पेज न. 40

यादव एम.एस(1994), आदिवासी समुदाय में स्वास्थ्य के कुछ पक्ष, पेज न. 29,81–7033–248–1.

Arlappa, N., Laxmaiah, A., Balakrishna, N., & Brahmam, G. N. V. (2010). Consumption pattern of pulses, vegetables and nutrients among rural population in India. *African Journal of Food Science*, *4*(10), 668-675.

Basumatary, S. An Analysis of Consumption Expenditure Pattern among the Bodo Tribe: A Case Study.

Bhatt, B. P., & Sachan, M. S. (2004). Firewood consumption pattern of different tribal communities in Northeast India. *Energy Policy*, *32*(1), 1-6.

Dubey, A. (2009). Poverty and Under-nutrition among Scheduled Tribes in India: A Disaggregated Analysis. *IGIDR Proceedings/Project Reports Series, [from http://www. igidr. ac. in/pdf/publication/PP-062-13. pdf, accessed on 12-12-2013]*.

Gupta, A., & Mishra, D. K. (2014). Food consumption pattern in rural India: A regional perspective. *Journal of Economic and Social Development*, *9*(1), 1-16.

Kshatriya, G. (2014). Changing perspectives of tribal health in the context of increasing lifestyle diseases in India. *J Environ Soc Sci*, *1*, 1-7.

Mishra R. (2017), Determinants of Child Malnutrition in Tribal Areas of Madhya Pradesh. Economic & Political Weekly, pp. 50-57 vol lIi no 5

Nayak, V., & Prasad, S. (1984). On levels of living of scheduled castes and scheduled tribes. *Economic and Political Weekly*, 1205-1213.

Rajak, S. J. Nutritional and Socio-Economic Status of Saharia Tribes In Madhya Pradesh.

Samal, R., & Patra, S. STANDARDS OF LIVING OF TRIBES IN KONDHAMAL DISTRICT OF ODISHA.

Venugopal, K., Kumar, L. V., Kumar, G. R., & Nagaraju, M. (2013). Consumption Pattern of Tribals-A Study in Seetampeta Mandal, Srikakulam District.

www.nipfp.org.in/media/.../Madhya_Pradesh_State_MDG_Report_NIPFP_UNICEF

https://trti.gujarat.gov.in/bhil

http://dhar.nic.in/notifications/profile.pdf